P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पं0 दीन दयाल उपाध्याय के राजनैतिक दर्शन में राष्ट्रवाद के मायने

पीयूष कुमार श्रीवास्तव
शोध छात्र, (वी0पी0 एड0)
समाज शास्त्र विभाग,
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट
सतना, म0प्र0, भारत

सारांश

अगर हम ऐतिहासिक आयने में राष्ट्र शब्द का मतलब समझना चाहें तो हम कह सकते हैं कि 17वीं शताब्दी में राष्ट्र का अभिप्राय राज्य की कुल जनसंख्या से हुआ करता था, चाहे उसमें जातीय या प्रजातीय एकता हो या न हो परन्तु बाद में एक राजनैतिक शक्ति के रूप में इसका उदय हुआ और 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में राष्ट्र का अर्थ राजनैतिक स्वतन्त्रता अथवा प्रभुसत्ता से लगाया जाने लगा चाहे वह प्राप्त कर ली हो या वांछित हो।

मुख्य शब्द : राष्ट्रवाद, संस्कृति, राजनैतिक।

प्रस्तावना

राष्ट्रवाद का एक सीमित दायरे में अर्थ एक ऐसी एकता की भावना या सामान्य चेतना जो राजनीतिक ऐतिहासिक धार्मिक भाषायी जातीय, प्रजातीय, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित रहती है। राष्ट्रवाद उस ऐतिहासिक प्रतिक्रिया का प्रतिपादन करता है जिसके द्वारा राष्ट्रीयता राजनीतिक एककों का रूप धारण कर लेती है अर्थात यह वह भावना है जिससे प्रेरित होकर वे लोग एक निश्चित और सशक्त राष्ट्रीयता का निर्माण करते हैं और संसार में आने लिए विशिष्ट पहचान बनाना चाहते हैं। राष्ट्रवाद की भावना एक प्रकार की समूह भावना हैं।[1]

पं0 दीन द्याल उपाध्याय हमेशा से ही अखण्ड भारत के पक्षधर थे वे हमेशा देश की अखण्डता एवं संप्रभुता के लिए प्रयासरत रहते थे उनका मानना था कि सम्पूर्ण जीवन की एकता की अनुभूति तथा उस अनभूति के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के रचनात्मक प्रयत्न का नाम ही इतिहास है। गुलामी हमारी एकात्वानुभूति में सबसे बड़ी बाधा थी। फलतः हम उसके विरूद्ध लड़े स्वराज्य प्राप्ति उस अनुभूमि में सहायक होनी चाहिए थी वह नहीं हुआ इसीलिए हम खिन्न हैं। आज हमारे जीवन में विरोधी भावनाओं का संघर्ष हो रहा है हमारे राष्ट्र की प्रकृति हैं अखण्ड भारत खण्डित भारत विकृति है। आज हम विकृत आनंदानुभूति का धोखा खाना चाहते हैं। किन्तु आनन्द मिलता नहीं यदि हम सत्य को स्वीकार करें तो हमारा अन्तः संघर्ष दूर होकर हमारे प्रयत्नों में एकता और बल आ सकेगा।[2]

वे हमेशा चाहते थे कि राजनीतिक आचरण संहिता बने जिससे कि जनता का विश्वास लोकतन्त्र एवं राजनेताओं पर बना रहे एवं के राजनेताओं की जीवनशैली ऐसी होनी चाहिए कि वे जनता के लिए आदर्श बन सके एवं जनता उनको कोसने के बजाय उन पर गर्व महसूस करें। उन्होंने 22 अगस्त 1957 को भोपाल में एक प्रेस कॉन्फेन्स के माध्यम से कहा था कि किसी भी स्वतन्त्र एवं जनतन्त्रवादी सरकार की कतिपय नीतियों के विरूद्ध जनान्दोलन स्वाभाविक है। भारत में ऐसे आन्दोलन की संख्या में समय–समय पर होते रहते हैं परन्तु अधिकांश अवसरों पर सरकार जन भावनाओं के इस प्रदर्शन पर तब तक चिन्ता नहीं करती जब तक आन्दोलन अर्द्धविद्रोह का रूप धारण न कर लें। विभिन्न सरकारों ने परम्पराओं की उपेक्षा कर सहानुभूति से विमुख होकर अवि–चारपूर्वक दमनचक्र का आलम्वन किया है। सरकार की इस नीति पर किसी को सन्तोष नहीं हो रहा है मेरा सुझाव है कि प्रधानमंत्री दलों का एक सम्मेलन बुलाये विभिन्न प्रश्नों पर जनभावनाओं को प्रकट करने के उपाय एवं साधनों पर विचार किया जाये मेरा मत है कि सामूहिक रूप से दलों के आचरण की कोई संहिता निश्चित की जानी चाहिए सरकार तथा जनता के बीच शीतयुद्ध की यह स्थायी स्थिति अवांक्षनीय है। इसके परिणामस्वरूप जनता का विश्वास शांतिपूर्ण एवं जनतांत्रिक उपायों पर से डिगता जा रहा है।[3]

वे राष्ट्र को जीवन में इनता महत्व देते थे जिनता कि आत्मा का शरीर में होता है। उनका मानना था कि राष्ट्र का अस्तित्व उसके नागरिकों के जीवन का ध्येयभूत आधार है। जब एक मानव समुदाय के समक्ष एक वृत विचार या आदर्श रहता है और वह समुदाय किसी भूमि विशेष को मातृभाव से देखता है तो वह राष्ट्र कहलाता है। इनमें से एक का भी अभाव रहा तो राष्ट्र नहीं बनेगा। जैसे शरीर में आत्मा नाम की वस्तु है, आत्मा के कारण व्यक्ति रहता है। आत्म का और शरीर का सम्बन्ध छूटने पर हम कहते हैं कि वह व्यक्ति समाप्त हो गया उसी प्रकार में विचार या मूलभूत सिद्धान्त है। शरीर शास्त्रियों का तो मानना है कि हमारे शरीर का प्रत्येक कोष कुछ वर्षों में पूर्ण रूप से बदल जाता है अर्थात पुराना शरीर नहीं रहता पूरा नया हो जाता है। इसमें तरह–तरह के परिवर्तन हो जाते हैं। परन्तु चूंकि आत्मा बनी रहती है इसलिए आत्मा के कारण शरीर चलता रहता है। इसे तर्कशास्त्र में मान्यता का सिद्धान्त कहते हैं। शायद उस मान्यता के कारण वह वस्तु चली आती है।[4]

पंडित जी ने बहुत सारगर्भित लेख लिखे जिनमें एकात्म मानववाद लोकमान्य तिलक की राजनीति, जनसंघ का सिद्धान्त और नीति जीवन का ध्येय, राष्ट्र जीवन की समस्यायें, राष्ट्रीय अनुभूति, कश्मीर, अखण्ड भारत, भारतीय राष्ट्रधारा का पुनर्प्रवाह, भारतीय संविधान, इनको भी आजादी चाहिए, अमेरिकी अनाज, भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा, बेकारी समस्या और हम, टैक्स या लूट विश्वासघात, दि टू प्लान्स डिवैलुएशन ए ग्रेटकाल आदि प्रमुख हैं। उनके लेखन का केवल एक ही लक्ष्य था, भारत की विश्वपटल पर लगातार पुनप्रेतिष्ठा और विश्वविजय।

राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में न केवल राजनैतिक वरन् पश्चिम की दृष्टि नकारात्मक भी रही है दीन द्याल जी लिखते हैं कुछ लोग राष्ट्रकल्पना को ही नकारात्मक मानते हैं भावात्मक नहीं। इंग्लैण्ड पर जब हमला हुआ तो राष्ट्रवाद जाग्रत हुआ एक अंग्रेजी कहावत है Nation Die in Peace and live in war? अर्थात शांतिकाल में राष्ट्र मर जाते हैं, युद्धकाल में जीवित रहते हैं।

पंडित जी व्यक्ति को राष्ट्र का उपकरण मानते थे, उनके अनुसार व्यक्ति भी राष्ट्र को प्रकट करने का एक साधन है। इस प्रकार व्यक्ति अपने स्वयं के अतिरिक्त राष्ट्र का भी प्रंतिनिधित्व करता है। इतना ही नहीं अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए राष्ट्र जितनी संस्थाओं को जन्म देता है। उनका उपकरण भी व्यक्ति ही है और इसलिए वह उनका भी प्रतिनिधि है। राष्ट्र में जो व्यापक समष्टियां है जैसे मानव, उनका भी प्रतिनिधित्व व्यक्ति ही करता है। अर्थात प्रत्येक व्यक्ति का बहुमुखी व्यक्तित्व है। परन्तु उनमें पारस्परिक खिंचाव या संघर्ष नहीं, अपितु एकात्मकता समन्वय एवं सामंजस्य रहता है। इस तथ्य को समझकर इस सामंजस्य के नियमों का आकलन और उसकी व्यवस्था ही मानव के आदर्शों के बीच की विसंगति को दूर कर उसे सुख और शांति दे सकती है।[5]

पण्डित जी के अनुसार जन प्रतिनिधियों द्वारा मनमानी हुकूमत को लोकतन्त्र नहीं कहते। लोकतन्त्र वह है जिसमें राष्ट्र नवरचना में आम लोगों का योगदान होता है।

हमारा राष्ट्र जीवन जो हमारों वर्षों से चल रहा है। यदि इसका आधार विरोध युद्ध या विपत्ति ही हो तो यह ठीक नहीं है। हम भावात्मक आधार पर खड़े है जीवन की एक दृष्टि हमारे सामने है। हम संसार में पैदा हुए हैं तो किसी का विरोध करने के लिए नहीं। हमारे सामने एक बौद्धिक विचार है कि हम जोड़ने वाले हैं तोड़ने वाले नहीं। दीनद्याल जी कहते है कि यह जोड़ने वाला विचार हमारी संस्कृति है तथा यही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का मर्म है।

पंडित दीनद्याल उपाध्याय ने अपने सिद्धान्त व नीति प्रलेख में कहा है कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक विशेष प्रकृति होती है जो ऐतिहासिक एवं भौगोलिक कारणों का परिणाम नहीं अपितु जन्म–जात है इसे चिति कहते हैं। राष्ट्रों का उदयावपात चिति के अनुकूल अथवा प्रतिकूल व्यवहार पर निर्भर करता है। चित्ति स्वयं को अभिव्यक्त करने तथा व्यक्तियों को पुरूषार्थ के सम्पादन की सुविधा प्राप्त करवाने के लिए अनेक संस्थाओं को जन्म देती है। जाति, वर्ण, पंचायत, संघ, विवाह, सम्पत्ति राज्य आदि इसी प्रकार की संस्थायें हैं।

यूरोपीय विद्धानों की राष्ट्रावाद विषयक परभाषायें भी तत्वतः संस्कृति मूलक है लेकिन राष्ट्र राज्य की परिस्थिति ने इसे फासीवाद, व नाजीवाद से जोड़ दिया राष्ट्र राज्य अवधारणा ने यूरोप को बांटा। युद्ध नियोजित किये तथा उपनिवेशवाद का वैश्विक अध्याय रचा। इस पर टिप्पणी करते हुए दीनद्याल उपाध्याय कहते हैं कि पश्चात्य राष्ट्रवाद विश्वशांति का दुश्मन बन गया है।

संस्कृति राष्ट्रवाद के सिद्धान्त के निर्माता दीनद्याल जी के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद का आधार उसकी संस्कृति है। देश में समता मूलक समाज बनाने में प्रयासरत पंडित जी ने भारतवर्ष में धर्मराज्य जो एक असाम्प्रदायिक राज्य उच्च विचार में एक विशाल राज्य की स्थापना की कामना की थी। उसके अनुसार धर्मराज्य अधिकार की अपेक्षा कर्तव्य पर बल देने वाला राज्य है पंडित जी के अनुसार मनुष्य के शरीर, बुद्धि, आत्मा सबका विकास हो तभी मानव का सम्पूर्ण विकास हो सकता है।

पं0 दीन द्याल उपाध्याय जी के शब्दों में हमारी भावना और सिद्धान्त है कि वह मैले कुचैले, अनपढ़ व सीधे साधे लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी चाहिए। यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है। जिस दिन हम इनको पक्के सुन्दर एवं स्वच्छ घर बनवाकर देंगे जिस दिन हम इनके हाथों पांवों की बिवाइयों को भरेंगे और जिस दिन इनको उद्योगों और धन्धों की शिक्षा देकर इनकी आय को ऊँचा उठा देंगे उसी दिन हमारा मातृत्व भाव व्यक्त होगा।[06]

आज हम सभी नागरिकों एवं जनप्रतिनिधियों का यह नैतिक, सामाजिक एवं मौलिक कर्तव्य है कि हम आपसी भेदभाव को भुलाकर भारतवर्ष में राष्ट्रप्रमे और राष्ट्रभक्ति जागृत करने का सामूहिक प्रयास करें इस सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की जागृति से राष्ट्र में शान्ति एवं व्यवस्था कायम होगी जिससे राष्ट्र को एक आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित किया जा सकेगा।[7]

एकात्म मानव दर्शन के अनुसार राष्ट्र नवरचना के कार्यों का शुभारम्भ ग्रामीण अंचल से ही होना चाहिए क्योंकि जीवन का मूल एवं प्राकृतिक संसाधनों का स्रोत और विकास का क्रम भी यही है।[8]

पंडित जी का मानना था कि लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए नवीन भारतीय पद्धति व परम्परा का निर्माण करें जब किसी भी दल को बहुमत न मिलने पर द्विदलीय ब्रिटिश और अमेरिकी ढांचे से भिन्न अनेक दलीय आधार पर हमें अपने देश में जनतन्त्र को सफल बनाने के लिए नवीन भारतीय पद्धतियां और परम्परायें निर्माण करने की ओर विचार करना पड़ेगा यदि हम चाहते हैं कि भारत में फ्रांस जैसी स्थिति न हो तो दलों के बीच जोड़ तोड़ और सिद्धान्त विहीन गठबन्धनों को त्यागकर हमें कुछ ऐसी परिवारी चलानी होगी कि जिसमें प्रत्येक दल और व्यक्ति अपने सिद्धान्तों और कार्यक्रमों के प्रति निष्ठावान रहते हुए भी शासनकार्य चलाने में अपना पूर्ण योगदान कर सकें तथा विचार और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता बनी रहे।[9]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में लेखन का उद्देश्य है कि वर्तमान समय में राजनीतिक दिशा व दशा का चिन्तन राष्ट्र के प्रति किस प्रकार का है राष्ट्र के प्रति समर्पण का भाव आज भी राजनीतिक क्षेत्र में निरन्तर प्रगति की ओर कदम बढ़ा रहा है।

निष्कर्ष

राजनीति समाज में कार्य करने के लिए है समाज का विकास किस प्रकार से उच्च शिखर पर पहुंचे तथा समाज में समरसता का भाव बना रहे समाज का हर वर्ग कदम से कदम मिलाकर साथ में चलने वाला हो कोई भी पीछे रहने वाला या छूटने वाला न हो।

अंत टिप्पणी

1. *Wed Page. https://hi.m.wikipeadia.org.*
2. *डा0 महेश चन्द्र शर्मा दीन दयाल उपायध्याय सम्पूर्ण बाड़ मय खण्ड दो प्रभात प्रकाशन 4/19 आसिफ अली रोड नई दिल्ली 110002 पृ0 सं0 127।*
3. *डा0 महेश चन्द्र शर्मा दीन दयाल उपाध्याय सम्पूर्ण बाड़ भय खण्ड पाँच प्रभात प्रकाशन 4/19 आसफ अली रोड नई दिल्ली 110002 पृ0 सं0 41।*
4. *वैकल्पिक मार्ग : एकात्म मानवदर्शन पं0 दीन दयाल् उपाध्याय बस्त राज पंडित सेकेटरी दीन दयाल शोध संस्थान दि बुक सेंटर लि0 सायन मुम्बई 400022, पृ0 – 28।*
5. *उपरोक्त पृ0 सं0 30।*
6. *डा0 नेदिता प्रसाद स्वामी विवेकानान्द जी के जीवन में एकात्म मानवदर्शन'' अभय महाजन द्वारा दीन दयाल शोघ संस्थान के लिए 7 ई0 स्वामी रामतीर्थ नगर झण्डेवाला एक्स, नई दिल्ली 110055 पृ0 सं0 08 ।*
7. *Wed Page. www.khabarexperss.comA*
8. *डॉ0 नंदिता पाठक स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन में एकात्म मानव दर्शन अभय महाजन द्वारा दीन दयाल शोघे संस्थान के लिए 7 – ई0 स्वामी रामतीर्थ नगर झाडेवाला एक्स नई दिल्ली 110055 पृ0 सं0 09।*
9. *डॉ0 महेश चन्द्र शर्माः दीन दयाल उपाध्याय सम्पूर्ण बाड़ भय खण्ड पाँच प्रभात प्रकाशन 4/19 आसिफ अली रोड नई दिल्ली 110002 पृ0 सं0 15–16।*